 अनिल अग्रवाल   । वेदांता समूह के संस्थापक और अध्यक्ष

वॉरेन बफेट से ज्यादा लाभ दे रही 'मेटल किंग' अनिल की कंपनी, 20 देशों में इनका कारोबार

बात 1973 की है। तब वे युवा थे। उम्र 19 साल थी। हाथ में एक टिफिन बॉक्स और एक बिस्तर लेकर वे पटना से मुंबई पहुंचे। तब उन्होंने पहली बार मुंबई की काली-पीली टैक्सी और डबल डेकर बस देखी थी, पर आंखों में सपने बड़े थे। इसलिए व्यापार की कोशिश शुरू की। हालांकि शुरुआती संघर्ष इतना ज्यादा रहा कि 10 में से 9 बिजनेस असफल रहे। लेकिन दसवें प्रयास में उन्हें बड़ी सफलता मिली। यह शख्स हैं वेदांता ग्रुप के संस्थापक अनिल अग्रवाल, जिन्हें आज दुनिया 'मेटल किंग' के रूप में पहचानती है।

19 साल की उम्र में वे स्क्रैप व्यापारी बन चुके थे। 1976 में करीब 22 साल की उम्र में दोस्तों, रिश्तेदारों से कुछ उधार और बैंक से लोन लेकर करीब 16 लाख रुपए में शमशेर स्टर्लिंग कॉर्पोरेशन खरीदा। यह कंपनी एनामेल्ड कॉपर बनाती थी। इसके बाद 1986 में स्टरलाइट इंडस्ट्रीज की स्थापना की। यह भारत की पहली निजी टेलीकॉम केबल बनाने वाली कंपनी थी, लेकिन असली छलांग तब लगी जब उन्होंने घाटे में चल रही बाल्को व हिंदुस्तान जिंक जैसी सरकारी कंपनियों को खरीद कर उनका कायाकल्प कर दिया। 2003 में उन्होंने लंदन में वेदांता रिसोर्सेज की स्थापना की, जो फाइनेंशियल टाइम्स स्टॉक एक्सचेंज- 100 में लिस्ट होने वाली पहली भारतीय मूल की कंपनी बनी। आज वेदांता की उपस्थिति भारत सहित 20 से अधिक देशों में है। हाल ही में जारी कुछ मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार उनके वेदांता समूह ने कुछ मामलों में महान निवेशकों में शामिल वॉरेन बफेट की कंपनी बर्कशायर हैथवे से भी ज्यादा लाभ दिया है।

चर्चा में क्यों- वेदांता की डीमर्जर योजना 2025 के लिए कंपनी को नेशनल कंपनी लॉ अपीलेट ट्रिब्यूनल से बड़ी राहत मिली है।

जन्म : 1 अक्टूबर 1954 (71 वर्ष), पटना

शिक्षा : मिलर हाईस्कूल पटना से स्कूली शिक्षा

परिवार : पत्नी- किरण अग्रवाल, दो बच्चे- बेटा अग्निवेश अग्रवाल, बेटी- प्रिया अग्रवाल।

संपत्ति : 38,468 करोड़ रुपए

(फोर्ब्स के अनुसार अनिल अग्रवाल और उनके परिवार की कुल संपत्ति)

2008 में अंर्स्ट एंड यंग ने एंटरप्रेन्योर ऑफ द ईयर का अवॉर्ड दिया था

2021 में गिविंग प्लेज पर हस्ताक्षर किए, अपने धन का 75 फीसदी दान देने की घोषणा कर चुके हैं।

दलाल स्ट्रीट के जादूगर : ₹1000 करोड़ को 70 हजार करोड़ में बदला

साल 2002 में, वेदांता (जो उस समय स्टरलाइट इंडस्ट्रीज के रूप में काम कर रही थी) ने हिंदुस्तान जिंक में 26% हिस्सेदारी का अधिग्रहण किया। कंपनी ने हिंदुस्तान जिंक के लिए प्रति शेयर 40.5 रुपए की सबसे ऊंची बोली लगाई। उसी साल अप्रैल में कंपनी ने ओपन ऑफर के जरिए प्रति शेयर 35 रुपए की दर से 20% और हिस्सेदारी खरीद ली। नवंबर 2003 में एक कॉल ऑप्शन का उपयोग करते हुए वेदांता ने 18.92% अतिरिक्त हिस्सेदारी हासिल की, जिससे हिंदुस्तान जिंक में उसकी कुल हिस्सेदारी 64.92% हो गई। अप्रैल 2000 से नवंबर 2003 के बीच वेदांता ने हिंदुस्तान जिंक में 64.92% हिस्सेदारी प्राप्त करने के लिए लगभग 1,000 करोड़ रुपए का निवेश किया और दो दशकों में यही 1000 करोड़ बन गए 70,000 करोड़। यह परफॉर्मेंस वॉरेन बफेट की कंपनी बर्कशायर हैथवे से भी बेहतर है।

परिवार : एल्युमिनियम कंडक्टर का छोटा- सा कारोबार करते थे पिता

अनिल अग्रवाल का जन्म बिहार के पटना शहर में एक मध्यमवर्गीय मारवाड़ी परिवार में हुआ था। पिता द्वारका प्रसाद अग्रवाल एल्युमिनियम कंडक्टर का छोटा-सा कारोबार चलाते थे। बचपन से ही अनिल के भीतर व्यापार की चिंगारी थी। स्कूल की पढ़ाई के बाद उच्च शिक्षा के बजाय 15 साल की उम्र में वे पिता के कारोबार में हाथ बंटाने लगे। सिर्फ 19 साल की उम्र में अवसरों की तलाश के लिए मुंबई पहुंच गए। अनिल अग्रवाल का विवाह किरण अग्रवाल से हुआ है। उनके दो बच्चे- बेटा अग्निवेश अग्रवाल और बेटी प्रिया अग्रवाल हैं। प्रिया अब वेदांता समूह की अगली पीढ़ी के प्रतिनिधि के रूप में कई प्रोजेक्ट्स में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

रोचक : वेदांता की बैठकों में वे आज भी कई जूनियर कर्मचारियों को नाम से बुलाते हैं

जुनून : रात में अकेले बाल्को का निरीक्षण करने पहुंच गए थे

- वे कई जूनियर कर्मचारियों को भी नाम से जानते हैं- अनिल कहते हैं, हर शख्स मेरी टीम नहीं, मेरा परिवार है।
- अधिग्रहण से पहले 'बाल्को' को लेकर उन्हें संदेह था। इसलिए बिना किसी को बताए वे खुद रात में छत्तीसगढ़ स्थित फैक्ट्री का निरीक्षण करने पहुंच गए थे।

उपलब्धि : 20 देशों में करोबार, 1.80 लाख करोड़ रु. की कंपनी

- 2020 में उन्होंने सीएसआर के तहत करीब 8500 करोड़ रुपए भारत के सामाजिक विकास पर खर्च करने की घोषणा की थी।
- आज दुनिया के 20 से अधिक देशों में उनका कारोबार संचालित हो रहा है। वे 1.80 लाख करोड़ रुपए से अधिक की मार्केट वैल्यू वाली कंपनी खड़ी कर चुके हैं।

खास : शिक्षा और सामाजिक कामों के लिए दान का संकल्प

- 2024 में वेदांता समूह ने राजस्थान में एक लाख करोड़ रुपए के निवेश की घोषणा की थी। इसमें रिन्यूएबल एनर्जी प्रोजेक्ट शामिल हैं।
- अनिल अग्रवाल ने अपनी संपत्ति का 75 प्रतिशत दान करने का संकल्प लिया है, जो करीब 21,000 करोड़ रु. है। यह राशि शैक्षणिक और सामाजिक कार्यों में खर्च की जाएगी।